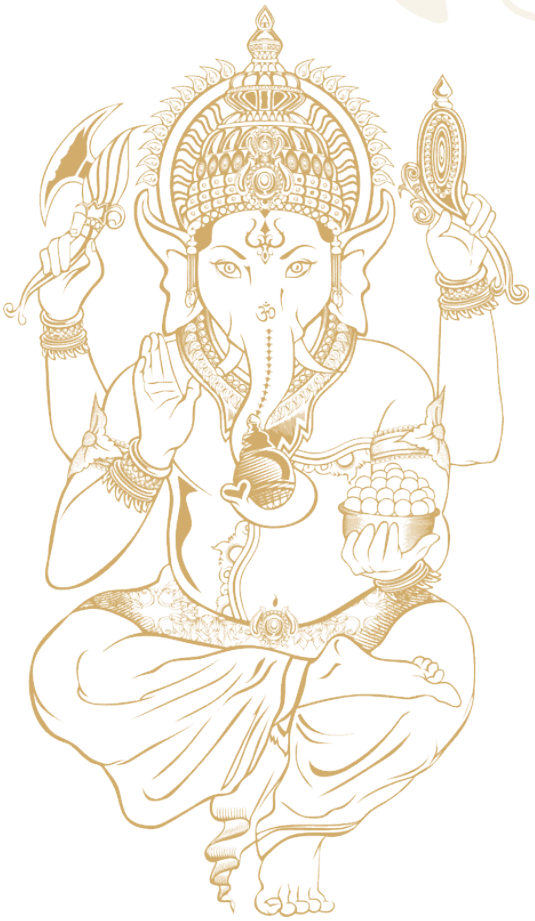

Yogesh

Dhanshri

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119932204

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/07/1997	जन्म तिथि	11-12/05/2001
शुक्रवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 22:05:00	जन्म समय	01:32:00 घंटे
घटी 41:15:44	जन्म समय(घटी)	49:57:10 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:42	सूर्योदय	05:33:08
19:19:59	सूर्यास्त	19:02:18
23:49:21	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:16

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 4मा 20दि	25:29:10	कुंभ	लग्न	कुंभ	04:42:47	शुक्र 13वर्ष 2मा 1दि
चन्द्र	02:15:17	कर्क	सूर्य	मेष	27:18:16	चन्द्र
08/12/2023	12:35:34	धनु	चंद्र	धनु	17:53:13	12/07/2020
07/12/2033	20:40:23	कन्या	मंगल व	धनु	05:10:41	13/07/2030
चन्द्र 07/10/2024	24:18:22	कर्क	बुध	वृष	16:07:25	चन्द्र 13/05/2021
मंगल 08/05/2025	25:52:02	मक व	गुरु	वृष	21:58:17	मंगल 12/12/2021
राहु 07/11/2026	00:18:49	सिंह	शुक्र	मीन	15:15:47	राहु 13/06/2023
गुरु 08/03/2028	26:22:11	मीन	शनि	वृष	08:43:24	गुरु 12/10/2024
शनि 08/10/2029	27:23:27	सिंह व	राहु	मिथु	13:17:25	शनि 13/05/2026
बुध 09/03/2031	27:23:27	कुंभ व	केतु	धनु	13:17:25	बुध 12/10/2027
केतु 08/10/2031	13:18:53	मक व	हर्ष	कुंभ	00:50:12	केतु 12/05/2028
शुक्र 08/06/2033	04:48:59	मक व	नेप व	मक	14:54:21	शुक्र 11/01/2030
सूर्य 07/12/2033	09:10:57	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	20:39:57	सूर्य 13/07/2030

लग्न-चलित

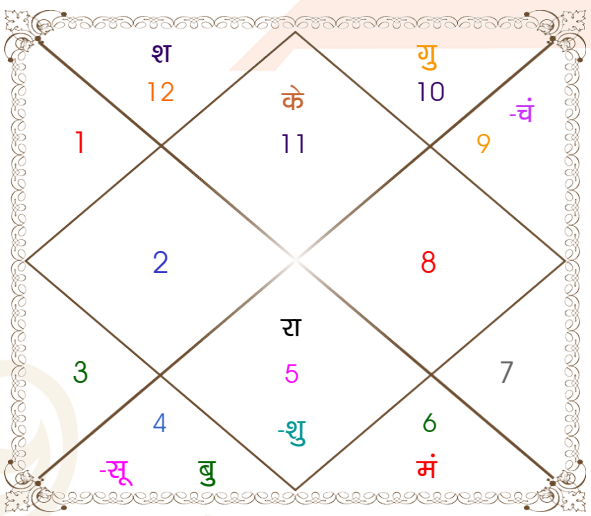

लग्न-चलित

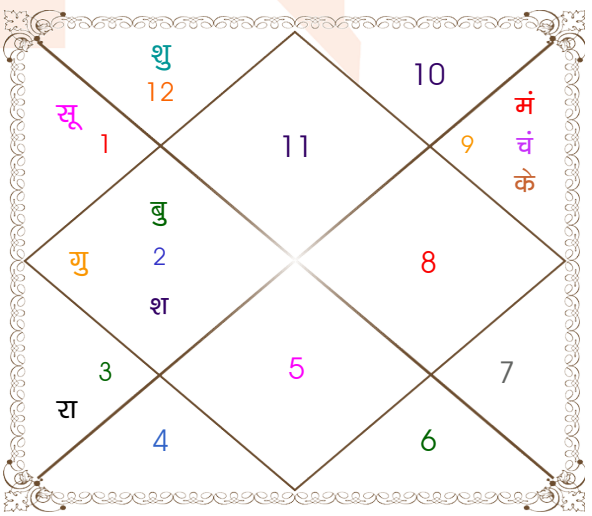

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

ल्वहमी का वर्ग मूषक है तथा वींदीतप का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ल्वहमी और वींदीतप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ल्वहमी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

वींदीतप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल वींदीतप कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ल्वहमी तथा वींदीतप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।